क्षितिज

आर्त्त शान्तिः फला विद्या
वैल्हम गर्ल्स स्कूल, देहरादून

वर्ष 14, संख्या–2, सितम्बर–अक्टूबर 2014

इस अंक में आगे है......

- पृष्ठ 1 : आराध्या
- पृष्ठ 2 : रिपार्ट कार्ड का स्वागत, संपादिका की कलम से
- पृष्ठ 3 : प्रकृति प्रेम
- पृष्ठ 4 : वो आठ दिन
- पृष्ठ 5 : कैसे करते हैं ये कलाकार ?
- पृष्ठ 6 : हमें आप पर गर्व है
- पृष्ठ 7 : सुखी भारत की कल्पना, अधूरे सपने
- पृष्ठ 8 : एक रोमांचक अनुभव, तारों भरे आकाश के नीचे
- पृष्ठ 9 : शहर से दूर, नई दिशाएँ
- पृष्ठ10 : क्या आप वैल्हम से परिचित हैं ?

आराध्या

प्रतिवर्ष दुर्गापूजा के अवसर पर बंगाल एवं भारत के अन्य भागों में लोग हजारों की तादाद में देवी के दर्शन करने के लिए उमड़ पडते हैं। इस भीड़ को देखकर ऐसा लगता है जैसे कोई समुद्र ही उमड़ा चला आ रहा है। दुर्गा माँ को प्रसन्न करने के लिए कई आदमी–औरतें, बड़े–बूढ़े, खाना तक छोड़ देते हैं अर्थात् नौ दिन तक उपवास रखते हैं। हमारा इतिहास व पौराणिक कथाएँ भी इस बात की साक्षी हैं कि महिलाएँ ही देवी का रूप होती हैं। ऐसे में हमारे इस देश में नारियों की दुर्दशा कैसे और किस प्रकार हो गई किसी को पता ही नहीं चला।

यदि कुछ पलों के मूर्ति दर्शन के लिए हम मानव, इस पहाड़ से उस पहाड़ तक जा सकते हैं तो फिर अपने समाज की बेटियों, माँओं का सम्मान करना, उनकी रक्षा करना हमें मंजूर क्यों नहीं है ? आए दिन अखबारों के पन्ने पलटने पर हमें औरतों के खिलाफ हुए विभिन्न अत्याचारों के बारे में पढ़ने को मिलता है। ऐसे किस्से तो हमारी सुबह की चाय और शाम की रोटी की तरह हमारे समान्य जीवन का एक हिस्सा बन गए हैं।

पैसे, बल, शक्ति की होड़ में लगे मनुष्य इतने अंधे हो चुके हैं कि सही–गलत का फर्क भी भुला चुके हैं। हम सब के घरों में रहने वाली नारियाँ मात्र हाड़ मांस की नारियाँ ही रह गई हैं और देवी का रूप अब बस मूर्तियों और तस्वीरों में ही देखने को मिलता है। आज जहाँ कई महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहीं हैं वहीं कई लडकियाँ आज भी हर रोज़ शोषण की आग में झुलसती जा रहीं हैं।

भारत की युवा पीढ़ी ही भारत का सुनहरा भविष्य है। सकारात्मक परिवर्तनों को लाने की ज़िम्मेदारी भी तो हमारी ही है। सत्य ही है कि बूँद–बूँद से सागर भरता है इसलिए हमें याद रखना चाहिए कि अत्याचार के खिलाफ उठाई गई हर आवाज़, उन्नति की ओर उठाए गए एक कदम के समान है। यदि हमने जल्द–से–जल्द अपने समाज की इन देवियों को सम्मान नहीं दिया तो प्रलय आने में अधिक समय नहीं लगेगा।

डर के साए में जीने का नहीं, आ गया है वक्त आवाज़ उठाने का,
अपने हक को गिड़गिड़ाकर माँगने का नहीं, वक्त आ गया है उसे छीन कर लेने का।

आर्तिका सिंह
कक्षा–बारह

21–23 अगस्त 2014 के दौरान वैल्हम गर्ल्स स्कूल और वैल्हम ब्वायज़ स्कूल द्वारा संयुक्त रूप से आई.पी.एस.सी. साहित्योत्सव का आयोजन किया गया था। इस आयोजन की सफलता के लिए वैल्हम ब्वायज़ स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती गुनमीत बिंद्रा, वैल्हम गर्ल्स स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती ज्योत्स्ना ब्रार व दोनों विद्यालयों के हिन्दी एवं अंग्रेज़ी विभागों के अध्यापकों को क्षितिज की ओर से ढेरों बधाइयाँ।

रिपोर्ट कार्ड का स्वागत

"गुड मौर्निंग, 69% ।" शायद हम सभी वैल्हमाईट्स को अपने स्कूल के रिपोर्ट कार्ड के बारे में इस प्रकार ही पता चलता है। प्रत्येक वैल्हमाईट की जिंदगी में उसका रिपोर्ट कार्ड किसी राक्षस से कम भयानक नहीं होता। छुट्टियों की शुरुआत में , जब कभी घर के दरवाज़े पर कोई खटखटाता है तो डर के मारे वैल्हमाईट्स घबरा जाती हैं। आसपास का माहौल थम जाता है और ऐसा लगता है कि अब हमारा जीवन वैल्हम गर्ल्स स्कूल के उस सफेद लिफाफे में कैद हो चुका है जिसे अभी – अभी बाहर खड़ा वह डाकिया हमारे माता–पिता के हाथों में दे रहा है। एक वैल्हमाईट का रिपोर्ट कार्ड तो किसी 'आई . आई . टी .' और मेडिकल में दाखिले की प्रतियोगी परीक्षा के परिणाम से भी बढ़कर होता है। यह केवल माता–पिता को ही नहीं दिखाया जाता है किंतु परिवार के सभी सदस्य, चाहे दादा हो या चाचा इसे समाचार पत्र की तरह चाटते हैं। रिपोर्ट कार्ड पढ़कर माँ, पिता से यह तो अवश्य कहती हैं –"अपनी बेटी के 70% अंकों से खुश हो आप ?और यदि किसी चमत्कार के कारण हमें 90% अंक मिल जाएँ तो माँ पूरे घर में ढिंढोरा पीटते हुए कहती हैं –" आज मुझे 'अपनी बेटी ' पर बहुत गर्व है।" कुछ वैल्हमाईट्स खुशनसीब भी होती हैं जिनके घरों में उनके पिता उनकी माँ से रिपोर्ट कार्ड छिपाकर रखते हैं। परंतु यह तो चार दिन की चाँदनी होती है। अंत में उनकी माँ को रिपोर्ट कार्ड का सच पता चल ही जाता है और फिर धरती हिला डालने में वह कोई कसर नहीं छोड़ती। ऐसे ही होता है वैल्हमाईट्स के घरों में रिपोर्ट कार्ड का स्वागत।

शाम्भवी,
कक्षा–दस

सम्पादिका की कलम से

प्रिय पाठकगण,

पिछले कुछ महीनों में हमारे विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों की धूम रही। कुछ ही दिनों में हम सबने बहुत सी खेल–कूद, वाद–विवाद, नृत्य –संगीत, सामान्य–ज्ञान व साहित्य आदि से सम्बन्धित प्रतियोगिताओं में भाग लिया। पिछले दो महीनों में हमने व वैल्हम ब्वायज़ ने संयुक्त रुप से आई.पी.एस.सी. साहित्योत्सव का, विद्यालय में आई. पी.एस.सी. टेबल टेनिस प्रतियोगिता, आई.पी.एस.सी. बास्केटबॉल प्रतियोगिता, अंतर्विद्यालयीय विज्ञान प्रशनोत्तरी तथा कई अन्य अंतर्सदनीय प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया। इन सभी गतिविधियों में भाग लेने के साथ–साथ सितम्बर माह में हमने अपनी अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ भी दीं। वैल्हम की अध्यापिकाओं व छात्राओं के जज़्बे को मैं सलाम करती हूँ। हर साल की तरह इस वर्ष भी अक्टूबर अपने साथ हवा में एक नई खुशबू तथा उल्लास व जश्न से परिपूर्ण वातावरण लाया है। आखिर ऐसा हो भी क्यों न, इस ही महीने में तो रावण का वध होता है, दीपावली के दीप जगमगाते हैं और स्थापना दिवस के अवसर पर सारा वैल्हम गर्ल्स स्कूल भी बिजली की लड़ियों से चमचमाता हुआ नज़र आता है। वैल्हमाइट्स का सबसे पसंदीदा मास भी यही है। कक्षा बारह की छात्राओं के लिए प्री बोर्ड व बोर्ड की परीक्षाओं से पूर्व थोड़ा सा आराम करने का भी यह समय होता है।

जिस साल मैंने वैल्हम में दाखिला लिया था उस वर्ष विद्यालय में पचासवाँ स्थापना दिवस मनाया गया था। आँखें बन्द करती हूँ तो लगता है जैसे यह कल ही की बात है।इतना लम्बा समय कैसे पलक झपकते ही बीत गया मालूम ही नहीं चला। इन्हीं चंद वर्षों में हम निरन्तर प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ते रहे। इमारतों से लेकर शिक्षा के परिणामों तक, खेल–कूद से लेकर मेस के खाने तक, हर क्षेत्र में हुई उन्नति सराहनीय है।

हमारे विद्यालय में तो विभिन्न गतिविधियों की धूम रही परंतु मुझे इस बात की भी प्रसननता है कि हमारे देश के माहौल में भी सकारात्मक परिवर्तन की उम्मीद दिखाई दे रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के स्वच्छ भारत अभियान, जन–धन योजना, उनकी विदेश यात्राओं ने, उनके जोश ने आम आदमी के मन में अच्छे दिन देखने की उम्मीद जगाई है। वास्तव में आज हमें स्वच्छ व सुन्दर भारत का नागरिक बन कर विश्व में अपने गौरव व सम्मान को बढ़ाने की आवश्यकता है। मुझे इस बात का गर्व है कि हमारे विद्यालय में गाँधी जयन्ती के अवसर पर वर्षों से' श्रमदान' की परम्परा चली आ रही है। इस दिन छात्राएँ एवम् अध्यापकगण बड़ी प्रसन्नता से 'श्रमदान' करते हैं एवम् चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को अवकाश देते हैं।

इस अंक में पाठकों को विद्यालय में आयोजित कुछ गतिविधियों की एक छोटी सी झलक दिखाई देगी व छात्राओं के मन के भाव व उद्गार उनकी रचनाओं के माध्यम से आप तक पहुँचेगे। आशा है कि 'क्षितिज' का यह अंक भी आप सभी का प्यार पाएगा।

सत्तावनवे स्थापना दिवस की पूरे वैल्हम परिवार को ढेरों बधाइयाँ !

– शुभकामनाओं सहित

आर्तिका सिंह

आर्तिका सिंह

प्रकृति प्रेम

— वेन्या
कक्षा बारह

आज जब हम अपने पर्यावरण को देखते हैं तब हमें पेड़ों से ज्यादा इमारतें दिखाई देती हैं। नीले–नीले अम्बर के बजाए फीके रंग का आसमान दिखता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हम ऐसे प्रदूषित वातावरण से दूर, देहरादून की हरी–भरी वादियों में बसे विद्यालय में पढ़ते हैं। हमारे विद्यालय में विशाल और हरे पेड़ों की कोई कमी नहीं है। रंग–बिरंगे फूलों से सजे उपवन हर अतिथि के मन को लुभाने में सफल होते हैं और तरह–तरह के पक्षी हमारे विद्यालय की सुंदरता में चार चाँद लगा देते हैं।

प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए इस अनोखे तोहफे का लाभ उठाते हुए वैल्हम की छात्राओं ने 'वाइल्ड लाइफ वीक' का आयोजन, इस वर्ष अगस्त के पहले सप्ताह में एक उत्सव की तरह धूम–धाम से किया। हर सदन को एक महाद्वीप दिया गया और कुल मिलाकर ग्यारह प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हर सदन को अपने महाद्वीप के रीति–रिवाज व संस्कृति को ध्यान में रखकर, उसके अनुसार एक प्रदर्शनी लगानी थी। बुलबुल सदन को दक्षिणी अमेरिका , फ्लाईकैचर सदन को उत्तरी अमेरिका, हुप्पूस सदन को ऑस्ट्रेलिया, ओरियल सदन को अफ्रीका और वुडपेकर सदन को यूरोप महाद्वीप पर आधारित प्रदर्शनी तैयार करनी थी। विद्यालय की सभी छात्राएँ ज़ोर शोर से विभिन्न प्रतियोगिताओं की तैयारियों में जुट गईं। पूरे स्कूल में एक उत्सव जैसा माहौल था। सभी छात्राओं ने एक दूसरे को जम कर टक्कर दी और शानदार प्रदर्शनियाँ तैयार कीं। बुलबुल सदन के सुंदर झरने से लेकर वुडपेकर सदन की नदी की सभी ने जी खोलकर प्रशंसा की। स्टोन पेंटिग, कुकिंग, हैंड पेंटिग, कार्टून स्ट्रिप, कबाड़ से जुगाड़, सम्भाषण आदि सभी प्रतियागिताओं का स्तर लाजवाब था। इन प्रतियोगिताओं के परिणाम इस प्रकार थेः–

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	I	II	III
1.	मेरी आवाज़ सुनो	हूपूज़	वुडपैकर्स	बुलबुल सदन ओरियल्स
2.	रंगोली	बुलबुल सदन	फ्लाईकैचर्स	वुडपैकर्स
3.	कबाड़ से जुगाड़	ओरियल्स	हूपूज़	बुलबुल सदन
4.	कॉमिक स्ट्रिप	हूपूज़	वुडपैकर्स	बुलबुल सदन
5.	स्टोन पेंटिंग	फ्लाईकैचस	हूपूज़	ओरियल्स
6.	वुड पेंटिंग	हूपूज़ बुलबुल सदन वुडपैकर्स	ओरियल्स	फ्लाईकैचर्स
7.	कान्टिनेंट ऐक्ज़िबिशन	हूपूज़ फ्लाईकैचर्स	ओरियल्स	बुलबुल सदन
8.	फोटोग्राफी	हूपूज़	फ्लाईकैचर्स	बुलबुल सदन वुडपैकर्स
9.	फेमस एन्वायरमेटलिस्ट	फ्लाईकैचर्स	ओरियल्स	हूपूज़
10.	प्रेसेंटेशन	बुलबुल सदन	हूपूज़	फ्लाईकैचर्स ओरियल्स
11.	कान्टिनेंटल डिलाईट	फ्लाईकैचर्स	ओरियल्स	हूपूज़

वो आठ दिन

साधारण सा स्वच्छता का पर्याय 'शंघाई इण्टर नेशनल एयरपोर्ट' हमारी दृष्टि में खरा उतरा। चीन की पवित्र भूमि पर, धूम मचाती हम पच्चीस वीरांगनाएँ 25 जुलाई, 2014 से 2 अगस्त , 2014 तक प्राचीन कुंगफू कला सीखने पहुँची थीं। हवाई अड्डे पर पहुँचने से लेकर मशहूर ' मैगलेव ट्रेन ' पर सवार होने तक चीन के निवासियों ने हमें हैरानी व प्रश्नात्मक नज़रों से निहारा। आदर्श भारतीय बच्चियाँ विदेश यात्रा स्वयं तय करती हुई आमतौर पर कहाँ दिखाई देती हैं? चीन के लोग अमरीकी व यूरोपियन फैशन से प्रभावित हैं। हवाई अड्डे पर हमारी मुलाकात हमारे गुरु 'शीफूजी' से हुई उनके साथ हमारी गाईड 'सलीना' भी थी जिन्होंने खूबसूरत गुलदस्तों से हमारा स्वागत किया। वैल्हम विद्यालय की पारम्परिक पोशाक . सलवार कमीज़ पहनकर हम वांगपू नदी के पास, यूरोपियन व फ्रेंच स्थापत्य कला के मिश्रण 'द बंद' को देखने निकले। हर कदम पर कोई–न–कोई चीनी नागरिक हमें रोककर हमारे साथ तस्वीर खिंचवाने की फरमाइश करता।

वांगपू नदी पर जलपोत की सैर के दौरान हमने शंघाई की हसीन पूडोंग स्काएलाईन का मज़ा लिया। 'द एरा एक्रोबेटिक्स शो' भिन्न–भिन्न प्राचीन मार्शल कलाओं, सदियों पुराने संगीत और कलियुग की लाजवाब लाईटिंग की तकनीक का मेल है। दस.दस मोटरसाईकिल वालों का मौत के जलते गोले में करतब करना कोई मामूली बात नहीं थी। फूल सी कोमल

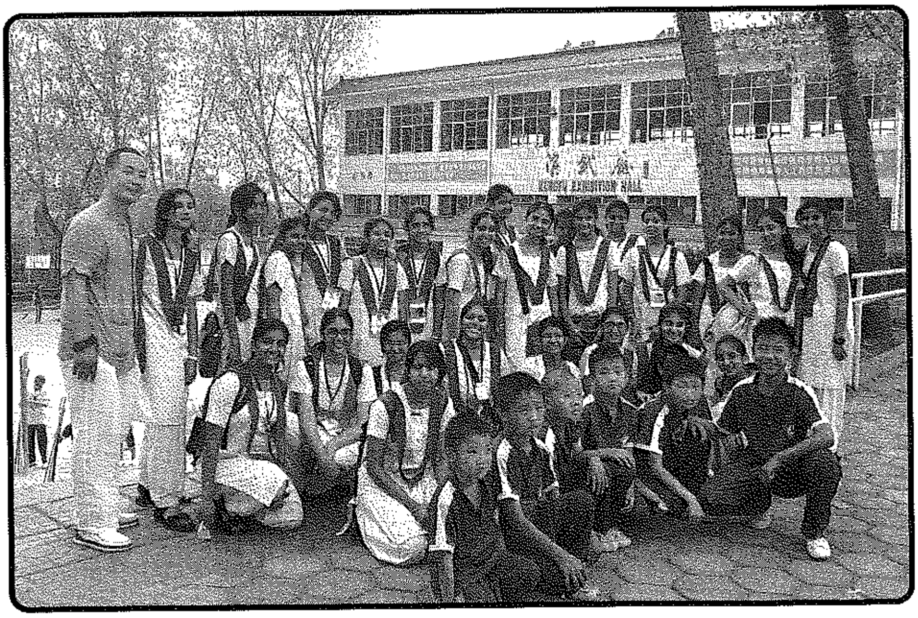

कन्याओं का प्लास्टिक की गुड़ियों के समान हर तरीके से मुड़ना या घूमना रोंगटे खड़े करने वाला दृश्य था। पंद्रह से बीस वर्ष की आयु के नौजवान युवकों को दस फीट से कूदते या गुलाटी खाते देख हमें चक्कर आ गये।

यू यूआन बगीचों के नज़ारे मुगलों के शालीमार या निशात बागों से कम नहीं थे। हजारों की तादाद में राहगीर विश्व के कोने–कोने से यू यूआन बगीचों की हरियाली में रंगने आए थे। चीन में बौद्ध धर्म प्रचलित है। उसी का उदाहरण है वहाँ की विशाल जेड बुद्धा मौनास्ट्री । बुद्ध भगवान की विशालकाय मूर्तियों के दर्शन करने के बाद हम 'अर्बन प्लैनिंग म्यूजियम' पहुँचे। शंघाई के सन् 2020 के स्वरुप की स्थापना सन् 2009 में हुई थी जिसमें से साठ प्रतिशत गगनचुम्बी इमारतों का निर्माण हो चुका है और बाकी बची इमारतें बनाई जा रही हैं। सूर्य के उगते ही हम ट्रेन से 'डेनफेंग' पहुँचे। हमारी मंजिल ईपो कालेज हमारे विश्राम स्थल के पास ही थी। ईपो कॉलेज के मुख्य फाटक पर फुर्तीले एवम् चुस्त–दुरुस्त लड़कों की तालियों की गड़गड़ाहट से हमारा स्वागत हुआ। कुछ विद्यार्थी हवा में कूद – कूद कर हमारे लिए कुंगफु कला का प्रदर्शन कर रहे थे। तीन वर्ष के बच्चों के सिर के बल 'कार्ट वील' जैसे ही कर्तब देखकर हर वैल्हमाइट के मुख से निकला, ' अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा है।'

हमारे गुरु श्री 'शीफूजी यैंगफैंग' ने हमें कुंगफु कला की आधारभूत बातें सिखाईं। हम लड़कियाँ अभी तक सिर्फ कराटे की किक्स और घूँसेबाज़ी से वाकिफ थी, अब हमें लड़ाई के साथ नियम, समय का सदुपयोग और अपनी शक्ति पर काबू करना सिखाया गया। उन तीन घंटों में हम कार्गिल के सैनिकों की भाँति सतर्क रहे। सही ' मूव्स ' करने की कोशिश की और थकने के बाद भी कर्मठ सिपाहियों की तरह अपना अभ्यास जारी रखा। सुबह के 6:30 बजे उठकर चीनी कैलेग्रेफी सीखने भी ईपो कालेज पहुंचे। सुंदर लिखावट में अपने परिवार के सदस्यों और प्रियजनों के नाम लिखकर हम चीनी डिमसम्ज़ बनाने निकले। भिन्न–भिन्न हरे पत्तों के मसालों को मैदे की छोटी–छोटी रोटियों में लपेटकर ' स्टीम ' करने में अत्यंत आनंद आया। थोड़ी देर सुस्ताने के पश्चात् हम प्राचीन चीनी चिकित्सा प्रणाली की कक्षा का हिस्सा बने। वहाँ डॉक्टरों ने एक राज का खुलासा किया, कि हमें मामूली बीमारियों के लिए दवाइयाँ लेने की आवश्यकता नहीं है बल्कि अपने शरीर के कुछ अंगों के पास कुछ बिंदुओं को दबाकर हम स्वस्थ रह सकते हैं। ज़ेन म्यूज़िक का आनंद लेने का सुनहरा

अवसर भी हमें मिला।

कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मैं शाओलिन मंदिर में प्रवेश करूँगी। मार्शल कला सीखने वाले विद्यार्थी का यह स्वप्न होता है कि वह शाओलिन मंदिर में अपनी कला प्रस्तुत करे, यह सुनहरा मौका हमें प्राप्त हुआ। शाओलिन मंदिर में भी एक प्रसिद्ध कुंगफु कार्यक्रम का आयोजन था जिसे हमें देखने का सौभाग्य मिला। थोड़ी देर प्रस्तुती देखने के बाद, वहाँ दर्शकों में से तीन लोगों को शाओलिन विद्यार्थियों से कुंगफु सीखने के लिए बुलाया गया। दर्शकों में से मैं और दो युवक मंच पर जा पहुँचे। तीन सौ लोगों की आँखें खुदपर गड़ी देखकर मेरे पसीने छूटने लगे। मुझे सिखाने वाले विद्यार्थी की आयु मुझसे अधिक नहीं थी, उन्होंने बड़े ही धैर्य से मुझे सिखाया व समझाया। अंजान लोगों की सभा में कुंगफु कला का प्रदर्शन सिर्फ मुझे ही दिखाने का मौका मिला, वह अनुभव मुझे आजीवन गर्व से भरता रहेगा।

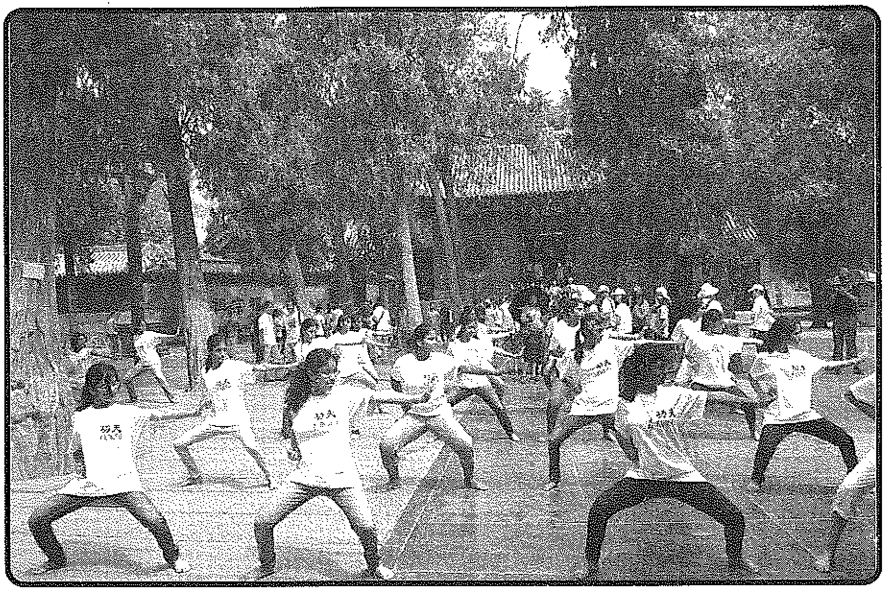

हम भव्य 'टेंपल ऑफ हैवन' व 'फॉर्बिडन सिटी' भी गए। इनका सौन्दर्य देखकर हमने दाँतों तले उंगली दबा ली।न्यूयौर्क के 'टाइम्ज़ स्क्वायर' के समान ,बीजिंग का 'टिआमेन स्क्वायर' लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। वहाँ पर पर्यटकों की इतनी भीड़ थी कि हमें एक दूसरे का हाथ पकड़कर चलना पड़ा। चलचित्रों और कहानियों तक ही सीमित 'पैण्डा बेयर' की एक झलक पाने के लिए हम बीजिंग के चिड़ियाघर पहुँचे। वहाँ से हम संसार के सात अजूबों में से एक मुख्य अजूबा 'द ग्रेट वॉल ऑफ चाईना' दखने पहँचे। जहाँ तक हमारी नज़र जा रही थी ,उसके पार भी चीन की विशाल दीवार फैली हुई थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो वह दीवार क्षितिज में जाकर कहीं समा रही हो। दूर से ही हमने 'द बर्ड्स नेस्ट स्टेडियम' के भी दर्शन किये जिसकी स्थापत्यकला को देखकर हम आश्चर्य चकित हुए बिना न रह सके।

चीन का आठ दिनों का यह सफर कब आरंभ हुआ और कब अंत हमें पता ही नहीं चला। वहाँ के लोगों के अनुशासन का लोहा मानना पड़ेगा। समय की पाबंदी चीन की प्रगति में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। चीन की संस्कृति ,भाषा व विचारधारा भारत से हटकर है किंतु फिर भी हमें वह देश अत्यंत प्यारा लगा। हमें पता नहीं है कि हम कब दोबारा चीन की भूमि पर जाएँगे ,परंतु हम इतना ज़रूर जानते हैं कि उस देश की यात्रा को हम कभी भुला नहीं पाएँगे!

— चाँदनी

कैसे करते हैं ये कलाकार ?

कभी–कभी मुझे अपने विद्यालय की अध्यापिकाओं के लिए बहुत दुख महसूस होता है। एक कक्षा में अट्ठाईस से तीस बच्चों को संभालना कोई बाएँ हाथ का खेल नहीं है। बातें तो हर कोई करता है,पर अध्यापिका पर जो बीतती है, उसका अनुभव किसी को नहीं होता।

जैसे ही अध्यापिका अपनी पीठ छात्राओं की तरफ़ करती हैं, क्षण–भर में ही पूरी कक्षा की हरकतें आरंभ हो जाती हैं। जब अध्यपिका ब्लैक–बोर्ड पर कुछ लिखती है यह सोचते हुए कि उनके होनहार और मेहनती बच्चे कुछ समझने की कोशिश करेंगे, यही 'होनहार' बच्चे पीठ–पीछे अपनी दिलचस्प पुस्तकों में डूब जाते हैं, 'माईकिलएन्जिलो' और 'डा विन्ची' से प्रेरित होकर अपनी पाठ्य पुस्तकों पर महान–से–महान चित्र बनाने लगते हैं, कक्षा के एक कोने में बैठी लड़की दूसरे कोने में बैठी लड़की से मुहँ अरोड़–मरोड़कर निःशब्द ही बोलती हुई दिखाई देती हैं। कोई उबासी लेती है, तो कोई बेकार की बात पर हँसती रहती है।

ये सब बातें तो बड़ी मामूली होती हैं, पर एक साधारण सी कक्षा में, सबसे महान कलाकारी तो वे विद्यार्थी कर पाते हैं, जो इस कला में माहिर होते हैं। यह कला है अध्यापिका की नज़रों से बचकर अपने नेत्रों को क्षण–भर का आराम देना। जी हाँ! मैं उसी महान कला की बात कर रही हूँ–अध्यापिका के विषय पढ़ाते हुए उनकी नाक के बिल्कुल नीचे होते हुए भी अनेक झपकियाँ लेना। कैसे करते हैं ये कलाकार ऐसे अदभुत चमत्कार? सुबह उठकर जो भी नींद पूरी नहीं हो पाती, वे लोग यही बची हुई नींद कक्षा में पूरी कर लेते हैं। उनकी बंद आखों और आराम करते हुए शरीर को हम सब (जिनमें इस विचित्र कला की कमी होती है) आँखें फाड़–फाड़कर देखते ही रहते हैं जैसे कि वे कोई अनोखे प्राणी हों। सच में, अपने दिमाग को इस हद तक नियंत्रित करने में वे योगियों और स्टीफन हॉकिंग जैसे महापुरूषों से भी महान होते हैं। ऐसे मनुष्यों के दिमागों की आप अगर नीलामी करेंगे, तो वाकई मालामाल हो जाएँगे क्योंकि ऐसे मनुष्य विश्व में बहुत कम होते हैं जो बस कुछ ही विद्यालयों में मिलते हैं।

आश्चर्य की बात तो यह है कि अगर हम इस कला का अनुभव करना चाहें, तो उसी पल अध्यापिका मुड़कर क्रोध भरी नज़रों से हमारी तरफ़ देखकर, शेर जैसे दहाड़कर हमें कक्षा से बाहर निकाल देती हैं। अब उनकी भी तो गलती नहीं है,वे तो बस अपना विषय पढ़ाना चाहती हैं,और हमारी भी तो गलती नहीं है, हम तो बस इस 'कला' को सीखना चाहते हैं। पर हाँ, अगर ऐसे कलाकार हमें यह कला सिखाने की ज़िम्मेदारी ले लें, तो सच में ही कुदरत का करिश्मा हो जाएगा!

— तारा कात्यायिनी सिंह

कक्षा – दस

हमें आप पर गर्व है

ये हमारे लिए बहुत गर्व का विषय है कि दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले, सामान्य ज्ञान पर आधारित , ' कौन बनेगा करोड़पति ' नामक कार्यक्रम में हमारी उप प्रधानाचार्या श्रीमती देयिता दत्ताजी ने सितम्बर – अक्टूबर 2014 में एक्सपर्ट की सलाह यानी कि त्रिगुणी के तीन सदस्यों में से एक सदस्य की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने असीमित ज्ञान से कितने ही प्रतिभागियों के भाग्य के द्वार खोल दिए। क्षितिज का सम्पादकीय दल उप प्रधानाचार्या श्रीमती देयिता दत्ताजी को इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर बधाई देता है और उनके इस कार्यक्रम में चयनित होने से सम्बन्धित जानकारी भी पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहा है।

प्रस्तुत हैं उप प्रधानाचार्या श्रीमती देयिता दत्ताजी से बातचीत के कुछ अंश –

क्षितिज : आपको आकाश, पाताल और धरती से सम्बन्धित सभी विषयों की सामान्य जानकारी है, यह कोई मामूली बात नहीं है। सारी बातें याद रखने के लिए क्या आप किसी खास नुस्खे का प्रयोग करती हैं?

श्रीमती दत्ता : मैं इस बात को नहीं मानती कि मैं सब कुछ जानती हूँ और जानकारी को याद रखने के लिए मैं किसी खास नुस्खे का प्रयोग भी नहीं करती हूँ।

क्षितिज : 'कौन बनेगा करोड़पति' में 'त्रिगुणी' के सदस्यों में आपका चुनाव किस प्रकार हुआ? क्या आपको इसके लिए कोई खास परीक्षा देनी पड़ी थी ?

श्रीमती दत्ता : ऐसी कोई बात नहीं, श्रीमान सिद्धार्थ बासु जो 'कौन बनेगा करोड़पति' के निर्माता हैं, उनसे मेरी इस्तानबुल के हवाई अड्डे पर मुलाकात हुई थी। उन्हें मैं पहले से जानती हूँ क्योंकि वे मेरे क्विज़ मास्टर थे और तबसे हमारी दोस्ती भी हो गई है। हमारी मुलाकात होने पर उन्होंने मुझसे पूछा–'कौन बनेगा करोड़पति' पर आप ' त्रिगुणी ' का पदभार सम्भालना चाहेंगी? "

मैंनें उत्तर दिया , " अभी मेरे पास वक्त नहीं है। "

इस पर उन्होंने मुझसे बस तीन दिनों के लिए मुम्बई आने की विनती की किन्तु मैंने फिर इन्कार किया क्योंकि मेरे पास स्कूल में बहुत काम था ।

मेरे द्वारा बार–बार मना किए जाने पर उन्होंने प्रधानाचार्या श्रीमती ज्योत्स्ना ब्रार को पत्र लिखा। श्रीमती ब्रार के कहने पर मैं मुम्बई गई।

क्षितिज : 'कौन बनेगा करोड़पति' कार्यक्रम में ' त्रिगुणी ' का पद सम्भालने के लिए जब आपको निमंत्रण मिला, तो आपके मन में क्या विचार आए थे?

श्रीमती दत्ता : मेरे मन में यह विचार थे कि मैं नहीं जाऊँगी, पर जब श्रीमान सिद्धार्थ बासु ने श्रीमती ब्रार से कहा तो मुझे बुरा लगा। मैंनें सोचा– चलो, मैं तीन दिनों के लिए मुम्बई चली ही जाती हूँ।

क्षितिज : 'त्रिगुणी' में आपके जो दो और साथी थे, उनका जीवन बहुत आरामदायक नहीं था, इसके बावजूद भी वे बहुत ज्ञानी थे, इस पर आपके क्या विचार हैं?

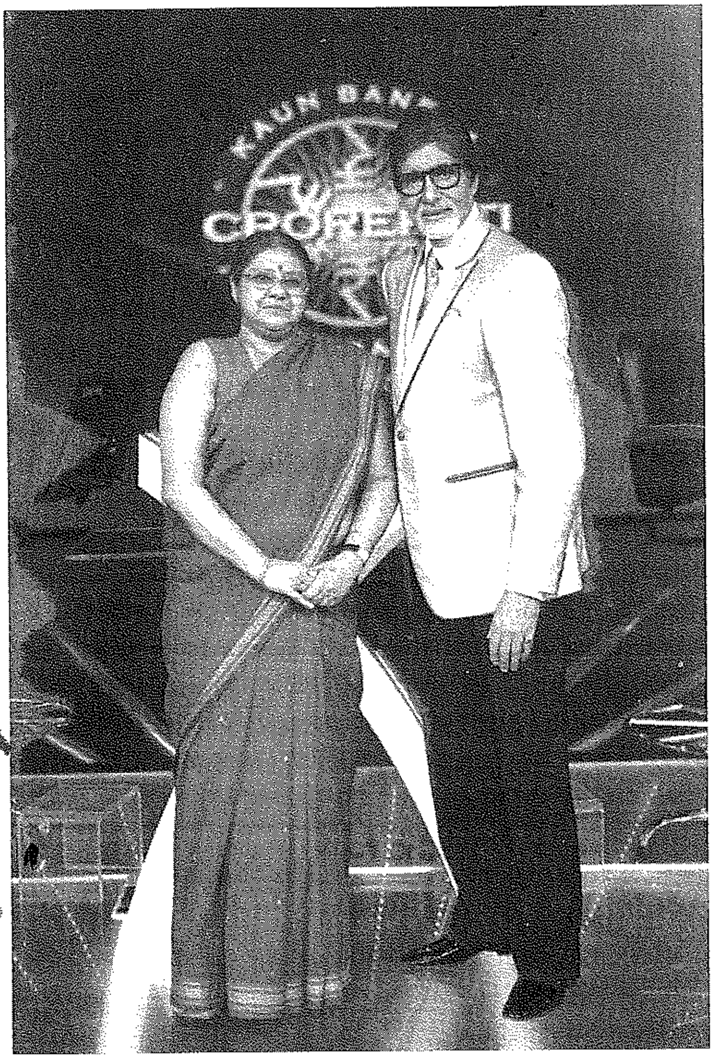

श्रीमती दत्ता : मेरे साथ जो दो और व्यक्ति 'त्रिगुणी' का हिस्सा थे वे बड़े विद्वान थे। एक ने 'कौन बनेगा करोड़पति' में पच्चीस लाख रुपए जीते थे और इस पैसे से उन्होंने मध्यप्रदेश में एक बहुत बड़ा विद्यालय स्थापित किया जिसमें अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से पढ़ाया जाता है। दो सालों में बारह सौ विद्यार्थियों ने इस विद्यालय मे दाखिला ले लिया है। मेरी बाईं ओर बैठने वाले व्यक्ति अपने गाँव के सरकारी स्कूल में अध्यापक हैं, वे भी बहुत ज्ञानी हैं। उन्होंने भी 'कौन बनेगा करोड़पति' में पच्चीस लाख रुपए जीते थे और इस पैसे से उन्होंने अपने गाँव में एक बहुत बड़ा व सुंदर पुस्तकालय स्थापित किया था। उस गाँव के सभी विद्यार्थी पी.सी.एस. या आई.ए.एस. की तैयारी करने के लिए उसका प्रयोग करते हैं। पिछले दो सालों में उनके गाँव से लगभग तीस विद्यार्थी (लड़के व लड़कियाँ) पी.सी.एस. में भरती हो गए हैं। 'त्रिगुणी' के मेरे दोनों साथी बहुत अच्छे व ज्ञानी व्यक्ति थे। धन का अभाव उनकी प्रगति व ज्ञान के रास्ते की कभी रुकावट नहीं बना।

क्षितिज : आपको स्टूडियो के चमक–दमक के माहौल और कैमरे के सामने कोई परेशानी तो नहीं हुई ?

श्रीमती दत्ता : नहीं, मुझे कोई परेशानी नहीं हुई परन्तु मुझे नींद बहुत आती थी क्योंकि शूटिंग बहुत उबाने वाली थी । मैंने वहाँ बैठकर दो किताबें पढ़ ली थीं।

क्षितिज : क्या आपको अमिताभ बच्चनजी का व्यक्तित्व प्रभावशाली लगा ?

श्रीमती दत्ता : यदि मैं अपनी बात करूँ तो बॉलीवुड के कलाकारों से मेरा कोई सरोकार नहीं है किन्तु अमिताभ बच्चनजी का व्यक्तित्व वास्तव में प्रभावशाली है। उन्हें हिन्दी व अंग्रेज़ी दोनों ही भाषाओं का अच्छा ज्ञान है और दोनों ही भाषाओं का प्रयोग वे बड़ी ही सहजता व सरलता से करते हैं। इतनी बड़ी हस्ती होने के बावजूद भी वे विनम्र स्वभाव के हैं और 'कौन बनेगा करोड़पति' में जो भी प्रतिभागी उनके सामने ' हॉट सीट ' पर बैठते हैं अमिताभ उनकी घबराहट अपने विनोदपूर्ण व्यवहार से दूर कर देते हैं।

क्षितिज : वैल्हमाइट्स को सामान्य ज्ञान बढ़ाने के लिए क्या करना चाहिए ?

श्रीमती दत्ता : सामान्य ज्ञान बढ़ाने के लिए छात्राओं में जिज्ञासा होनी चाहिए। उन्हें अच्छी किताबें पढ़नी चाहिएँ। ' इंडिया टुडे ' और ' आउट लुक ' जैसी पत्रिकाएँ पढ़नी चाहिएँ, अखबार पढ़ना चाहिए और अखबार का मतलब बस ' पेज थ्री ' नहीं है। जितना समय छात्राएँ दूरदर्शन पर धारावाहिक देखने में लगाती हैं उतने समय का उपयोग यदि वे समाचार के चैनल देखने में लगाएँ तो उनका सामान्य ज्ञान अवश्य बढ़ेगा ।

— तारा कात्यायिनी सिंह
कक्षा — दस

अधूरे सपने

गर्व होता था मुझे,
आपको अपना बुलाने में,
बताया नहीं था मैंने कभी,
आप मुझे 'माँ' से भी अधिक प्यारे थे।
जब थामती थी मैं आपका हाथ,
लगता था जैसे भगवान हों मेरे साथ
दुखी होकर भी आप सदा मुस्कुराते थे,
आँसू तो आप की आँखों में
शायद कभी न आते थे।
आपका सहारा पाकर ,
मैं बन गई थी
आकाश की ऊँची पतंग,
था मुझे विश्वास कि आपके होते हुए
जीत जाऊँगी मैं दुनिया की जंग।
भले ही लाड प्यार में डुबाया आपने,
हर गलत राह से भी बचाया आपने,
आपकी आज्ञा मानने में भी
अजब आनन्द था,
आपका तो गुस्सा भी
प्यार का आगार था।
काँपते थे हाथ आपके
फिर भी आप लाते थे
मेरी पसंद के उपहार खरीद के ।
पूरा विश्व घूमने की आपके संग,
योजना बना ली थी मैंने मन ही मन
मैंने तो आपको ही आदर्श माना,
फिर मृत्यु के साथ जीवन की दौड़ में,
आप हार गए कैसे नाना ?
मेरी सभी योजनाएँ, सभी सपने
रह गए हैं अधूरे
आप ही बताओ आपके बिन,
कौन करेगा इन्हें पूरे?

— वृंदा गुप्ता
कक्षा — ग्यारह

सुखी भारत की कल्पना

15 अगस्त 1947 के दिन हमारा प्यारा देश स्वतंत्र हो गया था। लाखों लोगों ने इस आज़ादी के लिए खुशी—खुशी अपने प्राण दे दिए थे। आज हमारे देश में काफी तरक्की तो हो रही है किन्तु प्रतिदिन उगते सूरज के साथ आने वाले अखबार के द्वारा हमें मालूम पड़ता है कि देश के किसी कोने में फिर किसी लड़की के साथ दुराचार किया गया है, किसी माँ के प्यारे बेटे का अपहरण किया गया है। भारत को दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातंत्र माना जाता है और इस विशाल प्रजातंत्र में भ्रष्टाचार तेज़ी से बढ़ रहा है। हम यह नहीं कह रहे हैं कि देश में प्रगति नहीं हो रही है परन्तु बढ़ते अपराधों, धोखाधड़ी आदि की घटनाओं के सामने प्रगति का कोई मूल्य नहीं रह जाता है।

स्वतंत्र तो हम हैं, परन्तु ऐसे हालातों के रहते क्या हम सुखी जीवन जी पाएँगे? भारत के नागरिक होने के नाते यह हमारा धर्म है कि हम आज अपने देश को इन सब बुराइयों से मुक्त करें।

वास्तविक स्वतंत्रता हमें तभी मिलेगी!

सृष्टि बंसल एवं प्रियांशी भाटिया
कक्षा — सात

एक रोमांचक अनुभव

जहाँ स्वर्ग है बसता,
वहाँ का रास्ता, कोई नहीं जानता।
स्पिती तो खुद में ही स्वर्ग है,
परन्तु है दुनिया से जुदा,
जो वहाँ जाए वो यही कहे,
है वहाँ के पहाड़ों में नशा।

हिमाचल प्रदेश के खूबसूरत पहाड़ों के बीचों बीच स्थित' स्पिती घाटी' के लोगों की अलग ही दुनिया है। 'ईकोस्फियर संस्थान' की स्थापना वैल्हम गर्ल्स स्कूल की पूर्व छात्रा इशिता खन्ना ने की है। ' स्पिती घाटी ' के निवासियों के लिए कई सालों से इस संस्थान के द्वारा कई तरह के प्रोजेक्ट लागू किए जा रहे हैं।

इस साल हमारे विद्यालय से पलक, भावना, और मनस्वी ने ईकोस्फियर संस्था के साथ एक प्रोजेक्ट में भाग लिया । हमने शिमला से अपनी यात्रा जीप में आरम्भ की। हम दूसरे दिन काज़ा पहुँचे जो स्पिती घाटी का सबसे बड़ा शहर है।

काज़ा में कुल 600 लोग रहते हैं। वहाँ हमारी मुलाकात इशिता से हुई और उन्होंने हमें प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी दी। काज़ा में दो दिन बिताने के बाद हम एशिया के सबसे ऊँचे गाँव कोमिक में पैदल यात्रा करके पहुँचे। कल्पा से काज़ा जाने वाला रास्ता दुनिया का सबसे खतरनाक रास्ता माना जाता है। रोचक बात तो यह है कि हमारी जीप के सामने भी दो बड़े पत्थर, पहाड़ से टूटकर गिर गए थे परन्तु हममें से किसी को कोई हानि नहीं पहुँची।

हमारे साथ अलग–अलग आयु के बीस और लोग थे। कोमिक में कुल बारह मकान थे और हम सभी उन्हीं बारह घरों में कोमिक के निवासियों साथ रहे। हमारा प्रोजेक्ट था कोमिक के लोगों के लिए एक 'सोलर बाथ' बनाना। हम लोग चार–चार सदस्यों के दलों में बँट गए। प्रतिदिन हम अलग–अलग कार्य करते थे। जैसे मिट्टी खोदना, पत्थर उठाना, मिट्टी में पानी मिलाना, फिर पत्थरों को एक साथ जमाना। पूरे समूह के लिए हम खाना भी बनाते थे। कार्य खत्म होने के बाद हम वहाँ के लोगों के साथ क्रिकेट और वौलीबॉल खेलते थे। हमने तीन दिन तक कोमिक में रुककर काम किया। फिर हम कोमिक से पैदल देमूल गाँव तक गए। देमूल से हम बरारी टॉप के लिए निकले जो 5001 मीटर की ऊँचाई पर स्थित था। वहाँ से वापिस आकर हमने देमूल के गाँव वालों के साथ 'कल्चरल डे' मनाया। हमने उनके लोकनृत्य सीखने का प्रयास किया। देमूल में दो दिन रुकने के बाद हम लालुंग गाँव गए और वहाँ से कोमिक पहुँचे। कोमिक में हमने अपना कार्य दो दिन में खत्म किया और फिर स्पिती के सबसे मुख्य लामा ने हमारे सोलर बाथ का उद्घाटन किया।
वास्तव में 'स्पिती घाटी' में हमारा अनुभव बहुत ही अलग और रोमांचक था। १७ दिन बहुत जल्द गुज़र गए और हम में से कोई भी उस दिव्य घाटी को छोड़कर वापिस नहीं आना चाहता था। अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध लेखक रस्किन बॉन्ड ने ' स्पिती घाटी ' के लिए उचित ही कहा है कि –

" यहाँ सिर्फ ईश्वर ही रह सकते हैं।"

पलक अग्रवाल
कक्षा – ग्यारह

तारों भरे आकाश के नीचे

धरती कहती बार–बार
संभालो मुझको अबकी बार
पर्यावरण का रखो ख्याल
हरा–भरा हो मेरा संसार ।
धरती पूछती है हमसे कई सवाल –
क्यों तुम इतना प्रदूषण फैलाते?
कई तरह के रोग फैलाते ?
नदी–नाले पालीथीन से भर डालते?
जगह–जगह क्यों कचरा फैलाते?
ए॰सी–कूलर घर में लगवाते,
पर क्यों मच्छर पाल मलेरिया
डेंगू फैलाते पेड़ काट फर्नीचर बनवाते?
पैसों की खातिर मासूम जानवरों
का घर उजाड़ते
बच्चों को पर्यावरण का पाठ पढ़ाते
जीवन शैली में उसे क्यों नहीं अपनाते?
दीवाली के पटाखों से पर्यावरण को
चोट पहुँचाते
धरती इस कदर तड़प रही है
बार–बार फरियाद कर रही है
पर्यावरण को तुम बचा लो
तारों भरे आकाश के नीचे
फिर से एक नया जहां बना दो
करो अपनी आदतों में सुधार
चलो उठो, कदम बढ़ाएँ
पर्यावरण मिलकर बचाएँ
अभी से खूब पेड़ लगाएँ
जंगल कटने से बचाएँ
गंगा–यमुना को साफ करवाएं
पानी की बचत का ज्ञान बढ़ाएं
सूखा–बाढ़ से राहत पाएं
जीव–जन्तुओं का जीवन बचाएँ
अपने–अपने वाहनों पर
सी०एन०जी लगवाएं
हो सके तो पैदल या
साइकिल पर जाएं
इसका कुछ तो लाभ होगा
आपदा का संकट टलेगा
पर्यावरण हमारा
दूषित न होगा
तारों भरे आकाश के नीचे
फिर से हरा–भरा नया संसार होगा।

– कामना बगई
कक्षा – 9

शहर से दूर

हाल ही में गोल्ड आई. ए. वाई. पी. के लिए कुछ वैल्हमाइट्स रैसिडेनशियल कार्यक्रम के तहत शुक्लापुर नामक गाँव में गईं थीं वहाँ हमारी मुलाकात हैस्को नामक संस्था के संस्थापक डॉक्टर अनिल जोशी से हुई। उनकी बातचीत से वैल्हमाइटस अत्यंत प्रभावित हुई और उन्हें गाँव की उन्नति में सहयोग देने की प्रेरणा मिली। सर्वप्रथम जोशी जी ने हमें केवल पाँच मिनट तक अपनी नाक बंद करके अपनी साँस रोकने को कहा। कुछ ही क्षणों में हम हाँफने लगे। निर्धारित समय समाप्त होने के पश्चात् जोशी जी ने हमारा ध्यान उन वस्तुओं की ओर आकर्षित किया जो हमें प्रकृति से निःशुल्क प्राप्त होती हैं। जैसे अनाज, स्वच्छ हवा, फल, सब्जियाँ मिट्टी आदि फिर उन्होंने हमें यह बताया कि कैसे ये प्रकृति के फरिश्ते गाँव में उत्पन्न होते हैं। उन्होंने हमें बताया कि कैसे गाँव शहर से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हैं और डॉक्टर, वैज्ञानिक, इंजीनियर आदि से अधिक महत्त्वपूर्ण किसान हैं।

उन्होंने हमें बताया कि कैसे आर्थिक प्रगति से ज़्यादा ज़रूरी प्राकृतिक प्रगति है क्योंकि जिस दिन सारी नदियाँ मलिन होकर सूख जाएँगी, सारे पेड़ कट जाएँगे और सृष्टि अपनी ही गंदगी में दब जाएगी तब मानव पेपर के नोट तो नहीं खा पाएगा, आसमान में फल सब्जी तो नहीं उगा पाएगा।

जोशी जी ने हमें बताया कि उन्हें भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री बहुत पसंद हैं क्योंकि वे भारत के सामाजिक जीवन में सुधार लाना चाहते हैं। वे विश्व के लोगों को किसानों और गाँवों की महत्ता महसूस कराना चाहते हैं। वे हर वर्ग में समाज सेवा को बढ़ावा देना चाहते हैं।

वैल्हमाइट्स को लगता है कि जोशी जी का प्रयास भी समाज सेवा में क्रांति लाने का कार्य करेगा और भारत के कोने – कोने में लोग शारीरिक श्रम को मानसिक श्रम के बराबर का दर्जा देंगे।

– वृंदा गुप्ता
कक्षा – ग्यारह

नई दिशाएँ

– दिक्षिता गोयल
कक्षा–ग्यारह

8 से 12 अगस्त,2014 के बीच, मॉडर्न स्कूल, दिल्ली में आयोजित 'यंग लीडर्स कोंक्लेव' एक बहुत ही अद्भुत अनुभव था। यह किसी प्रकार की प्रतियोगिता नहीं बल्कि एक ऐसा मंच था जहाँ पच्चीस विद्यालयों से चार 'लीडर' आए थे और उन्होंने भारत एवं भारतीय सरकार से सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा की। इस अवसर पर हमारे विद्यालय का प्रतिनिधित्व तनाज़ शेरगिल, रिया डोकानिया, ध्रुवा शुक्ला और दिक्षिता गोयल ने किया। इस कोंक्लेव के बारे में एक और खास बात यह थी कि वहाँ हमें अपने विद्यालय के छात्रों के साथ नहीं बल्कि दूसरे विद्यालयों से आए हुए प्रतिभागियों के साथ मिलकर काम करना था। इन चार दिनों में हमें दिल्ली के यमुना तट, झोपड़–पट्टियों एवं कई सरकारी अस्पतालों का दौरा कराया गया। इन स्थलों का दौरा करने के बाद हम सबने भारत की सच्चाई के दर्शन किए। जहाँ एक तरफ लोग अपने ऐशो–आराम की छोटी सी दुनिया में मग्न रहते हैं वहीं दूसरी ओर आज भी भारत के कई अस्पतालों व घरों की परिस्थितियाँ शोचनीय हैं। आज के इस युग में साधारण शिक्षा के अलावा विद्यालयों में ऐसी शिक्षा भी मिलनी चाहिए जिसकी मदद से हम सब अपने देश के सुधार में सहयोग दे सकें। हमें इस दिलचस्प कार्यक्रम पर ले जाने के लिए मैं सुश्री वत्सला दूबे जी को धन्यवाद कहना चाहूँगी।

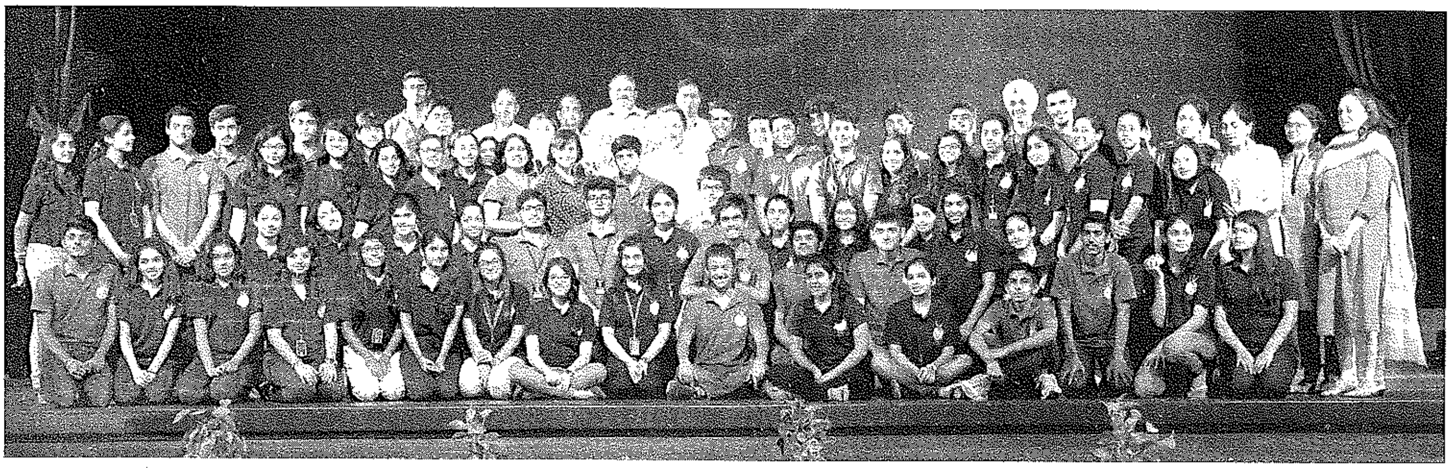

क्या आप वैल्हम से परिचित हैं?

प्रश्न 1. कौन से सदनों का जन्म ब्लूजे से हुआ है?
- क) फ्लाईकैचर्स + हुपूज़
- ख) फ्लाईकैचर्स + वुडपैकर्स
- ग) वुडपैकर्स + बुलबुल्स
- घ) बुलबुल्स + ऑरियल्स

प्रश्न 2. हैरी पॉटर नामक पुस्तक और हमारे विद्यालय में कौन सी जगह मिलती जुलती है?
- क) ऑडिटोरियम
- ख) डाईनिंग हॉल
- ग) प्रधानाचार्या जी का ऑफिस
- घ) नसरीन

प्रश्न 3. हमारे विद्यालय में कौन सा नाम सबसे आम है ?
- क) सीमा
- ख) छवि
- ग) रीया
- घ) ममता

प्रश्न 4. हमारे डाईनिंग–हॉल में सबसे नया व्यंजन कौन सा है ?
- क) डोनट
- ख) पैनकेक
- ग) कुल्वा + कबाब
- घ) अमूल कूल मिल्क पैक

प्रश्न 5. हमारे विद्यालय में कौन सा खेल सबसे मशहूर है ?
- क) टैनिस
- ख) बास्केटबॉल
- ग) एरोबिक्स
- घ) कराटे

प्रश्न 6. हमारे विद्यालय में सबसे कम कौन सी गतिविधि होती है?
- क) पढ़ाई
- ख) मनोरंजन
- ग) खेल–कूद
- घ) खाना

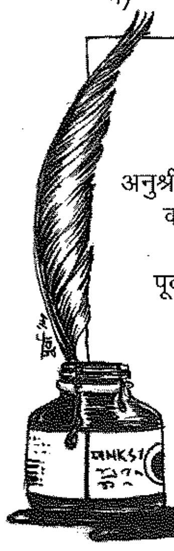

सम्पादकीय दल

मुख्य सम्पादिका – आर्तिका सिंह

सम्पादकीय दल

अनुश्री शर्मा, ऐश्वर्या कुमार, तारा कात्यायिनी सिंह, कामना बगई, रागिनी कयाल, सृष्टि बंसल

कलाकृति

पूर्वा राधे गोयल, कनिष्का गुप्ता, गरिमा जैन

फोटोग्राफर

कृतिका कालरा, मैत्रिका कुमारी राठौर

विशेष सहयोग

श्री श्रीकर कनहरे

प्रभारी शिक्षिका

श्रीमती कुसुम डंडोना

प्रश्न 7. इस वर्ष आयोजित हुए ' लिट्ररी फैस्टीवल ' के बैजों का डिज़ाइन किसने तैयार किया ?
- क) श्रीमती गीता शर्मा
- ख) सुश्री सपना शर्मा
- ग) प्रियल चौधरी
- घ) वाईस कैप्टन्स

प्रश्न8. हमारे विद्यालय में सबसे लंबे बाल किसके हैं?
- क) आरजा बेदी
- ख) जपनीत
- ग) श्रीमती उपमा शुक्ला
- घ) श्रीमती जुगरान

प्रश्न9. विद्यालय में ऐसी कौन सी जगह है जहाँ वैल्हमाइट्स कभी नहीं गई ?
- क) अस्पताल के पीछे
- ख) एकैडेमिक ब्लॉक के पीछे
- ग) ए.वी.सी. के बाहर वाली छत
- घ) नसरीन में मिस लिनैल का पुस्तकालय

प्रश्न10. हमारे विद्यालय में नकली संतरे का पेड़ कहाँ पड़ा हुआ है?
- क) अस्पताल के पीछे
- ख) कॉस्ट्यूम के कमरे में
- ग) पुस्तकालय में
- घ) डाईनिंग–हॉल में

इस प्रश्नावली के उत्तर अति शीघ्र आर्तिका को देने वाले प्रथम दो विजेताओं के नाम प्रार्थना सभा में घोषित किए जाएँगे और विजेताओं को इनाम भी दिए जाएँगे! हमें आशा है आपको यह प्रश्नावली दिलचस्प लगी होगी।

– **अनाहिता साहु एवं ऐश्वर्या कुमार**
कक्षा – ग्यारह

बधाई

- U-14 आई.पी.एस.सी. बास्केटबॉल टूर्नामेंट व U-14 डी.डी.सी.एस.ए. बास्केटबॉल टूर्नामेंट में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए विद्यालय की बास्केटबॉल टीम को ढेरों बधाइयाँ।
- U-19 आई.पी.एस.सी. टेबल टैनिस टूर्नामेंट में प्रथम स्थान पाने के लिए सभी खिलाड़ियों को एवं अनुष्णा गुगालिया को एकल प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के लिए बधाई।
- मेजर ध्यान चंद जिला हॉकी टूर्नामेंट में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के लिए खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई।
- समर वैली स्कूल में आयोजित सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के लिए एवं विद्यालय में आयोजित अंतर्विद्यालयीय विज्ञान प्रश्नोत्तरी 'यूरेका' में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के लिए प्रतिभागियों को बधाइयाँ।

स्वागत

विद्यालय के आई.टी. विभाग में श्री सिराज अनवर जी का क्षितिज की ओर से हार्दिक स्वागत है।